Krishi Kumbh
Online E-Magazine
Www.KrishiKumbh.Com

कृषि कुंभ

E-ISSN: 2582-9769

कृषि कुंभ
हिंदी मासिक पत्रिका

खण्ड 05 भाग 09, (फरवरी, 2026)
पृष्ठ संख्या 20–21

भारतीय लोकगीत और कृषि : बारहमासा परंपरा के संदर्भ में एक ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन

पंकज शर्मा[1], महेश कुमार[2] एवं ज्योति प्रकाश सिंह[3]

[1]डॉ राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या
[2]केंद्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान, जोधपुर
[3]आईसीएआर–राष्ट्रीय कृषि उपयोगी सूक्ष्मजीव ब्यूरो, कुशमौर, मऊ, उत्तर प्रदेश, भारत।

Email Id: – pankaj08041990@gmail.com

भूमिका

भारतीय ग्रामीण जीवन की आत्मा लोकगीतों में बसती है। खेतों की हर आहट, हर मौसम का रंग और हर श्रम का पसीना लोकगीतों में रूपांतरित होकर एक सांस्कृतिक धरोहर बन जाता है। विशेषकर उत्तर भारत जैसे उत्तर प्रदेश, बिहार, हरियाणा, पंजाब और राजस्थान में कृषि कार्य के प्रत्येक चरण से जुड़े लोकगीत किसानों के श्रम को सहज बनाते हैंतथा प्रकृति,

संस्कृति, भावनाओं और सामाजिक संरचना का सजीव चित्र प्रस्तुत करते हैं।

भारतीय लोक परंपरा में बारहमासा, सोहर, कजरी, फगुआ, चौती, हरवा गीत, मड़हन गीत, बीजरोपण गीत, घूमर, गायन नृत्य तथा पशुपालन से जुड़े गीत कृषि आधारित जीवन शैली के प्रतिबिंब हैं। यह लेख बारह मासों में गाए जाने वाले लोकगीतों और कृषि के पारस्परिक संबंध का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

1. 1.**चैत्र (मार्च अप्रैल):** चैत्र वह समय है जब रबी की फसल पककर तैयार हो जाती है। खेतों में सरसों की खुशबू और गेहूं की सुनहरी बालियां दिखाई देती हैं। चौती गीत प्रकृति के नवजीवन का स्वागत करते हैं। इस समय किसान फसल की कटाई करते हैं तथा महिलाएं घर में अनाज संग्रह का कार्य करती हैं।
2. **वैशाख (अप्रैल मई) :** यह फसल समेटने और भंडारण का समय होता है। तेज धूप में खड़ी फसल काटना कठिन कार्य है, किंतु लोकगीत इस श्रम को सहज और सामूहिक बना देते हैं।
3. **ज्येष्ठ (मई जून):** ज्येष्ठ में भीषण गर्मी होती है। इस समय खेती से अधिक पशुपालन, जल संरक्षण और खेतों की आगामी तैयारी पर ध्यान दिया जाता है।
4. **आषाढ़ (जून जुलाई):** आषाढ़ में मेघों का आगमन किसानों में नई ऊर्जा भर देता है। यह बुवाई की तैयारी का समय होता है। मेघ गीत वर्षा की कामना के लिए गाए जाते हैं। बारहमासा परंपरा में आषाढ़ का वर्णन विरह और आशा के मिश्रण के रूप में मिलता है।
5. **श्रावण (जुलाई अगस्त):** श्रावण वर्षा और हरियाली का महीना है। खेतों में सामूहिक रोपाई होती है और घरों में झूले पड़ते हैं। कजरी गीत पूर्वी उत्तर प्रदेश और बिहार की प्रमुख लोकगीत परंपरा है।

6. **भाद्रपद (अगस्त सितंबर):** यह निराई गुड़ाई और फसल संरक्षण का समय है। भादो गीतों में अत्यधिक वर्षा, घर की चिंता और खेतों की सुरक्षा का भाव व्यक्त होता है।
7. **आश्विन (सितंबर अक्टूबर):** धान की बालियां पकने लगती हैं। कतरनी गीत धान की कटाई के समय गाए जाते हैं। किसान देवी दुर्गा से उत्तम पैदावार की प्रार्थना करते हैं।
8. **कार्तिक (अक्टूबर नवंबर):** इस महीने कृषि और आध्यात्मिकता का संगम दिखाई देता है। तुलसी पूजा, नदी स्नान और गोधन पूजा से जुड़े गीत गाए जाते हैं। पशुओं को परिवार के सदस्य के रूप में सम्मान दिया जाता है।
9. **अगहन या मार्गशीर्ष (नवंबर दिसंबर):** धान की मड़ाई का समय अत्यंत परिश्रमपूर्ण होता है। मड़हन गीत सामूहिक श्रम के दौरान गाए जाते हैं। गन्ने की कटाई भी प्रारंभ होती है।
10. **पौष (दिसंबर जनवरी):** इस माह कृषि कार्य अपेक्षाकृत कम होते हैं किंतु घरेलू गतिविधियां बढ़ जाती हैं। पौष गीत रिश्तों, प्रेम और पारिवारिक जीवन का चित्रण करते हैं। राजस्थान में ऊन कातने और पशु देखभाल के समय गीत गाए जाते हैं।
11. **माघ (जनवरी फरवरी):** रबी की फसलों की सिंचाई का समय होता है। माघी गीत ठंड की कठिनाइयों और आने वाली अच्छी फसल की आशा को व्यक्त करते हैं।
12. **फाल्गुन (फरवरी मार्च):** फाल्गुन उल्लास और रंगों का महीना है। फगुआ या फाग गीत होली के आनंद और सामाजिक मेलजोल का प्रतीक हैं। होलिका दहन को कृषि की उर्वरता से जोड़ा जाता है।

लोकगीत और कृषि का पारस्परिक संबंध श्रम को आनंदमय बनाना कठोर कृषि श्रम के दौरान लोकगीत थकान को कम करते हैं और सामूहिकता की भावना विकसित करते हैं। कृषि ज्ञान का संचार लोकगीतों में मौसम, वर्षा, कीट पतंग, रोग और प्राकृतिक संकेतों का उल्लेख मिलता है, जो पारंपरिक कृषि ज्ञान का माध्यम है। सामाजिक एकता का माध्यम सामूहिक गायन सहयोग, प्रेम और सामाजिक एकजुटता को सुदृढ़ करता है।

ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

इन ऋतुओं का ऐतिहासिक विश्लेषण करने पर स्पष्ट होता है कि भारतीय लोकगीत और कृषि का संबंध केवल वर्तमान ग्रामीण जीवन तक सीमित नहीं है। वैदिक काल में ऋग्वेद और अथर्ववेद में वर्षा, इंद्र, पृथ्वी, अन्न और पशुओं से जुड़े मंत्र यह सिद्ध करते हैं कि कृषि भारतीय जीवन की केंद्रीय धुरी थी। इन वैदिक ऋचाओं में सामूहिक गान और अनुष्ठानात्मक गीतों के रूप में लोकगीतों का प्रारंभिक रूप दिखाई देता है। गुप्तकाल को भारतीय ग्रामीण अर्थव्यवस्था का स्वर्णयुग माना जाता है। इस काल में कृषि उत्पादन के साथ ग्राम्य संस्कृति का भी विकास हुआ। त्योहारों, ऋतुओं और कृषि कर्मों से जुड़े गीत लोक जीवन का अभिन्न अंग थे। मध्यकाल में भक्ति आंदोलन के दौरान कबीर, सूरदास, मीराबाई और नामदेव जैसे संत कवियों की रचनाओं में खेत, पशु, ऋतु और ग्रामीण श्रम के प्रतीक स्पष्ट रूप से मिलते हैं।

अकबरकालीन ग्रंथ आइने अकबरी में वर्णित कृषि चक्र, फसलें, कर व्यवस्था और ग्रामीण जीवन यह दर्शाते हैं कि लोकगीत किसानों के सामाजिक और भावनात्मक जीवन का अभिन्न अंग थे। इस प्रकार भारतीय लोकगीत न केवल सांस्कृतिक अभिव्यक्ति हैं, बल्कि कृषि आधारित सभ्यता के ऐतिहासिक दस्तावेज भी हैं।